

प्रदूषण की समस्या  
 विद्यमान की समस्या.  
 जैविक विविधता में कमी,  
 जंगल का क्षय.

जैविक और अजैविक कारकों के अंतःक्रमण से उत्पन्न वातावरणीय दृष्टावली को पारिस्थितिकी संतुलन कहते हैं, जीवमंडल एक जटिल पारिस्थितिकी संतुलन है,

वस्तुतः ६७० सालों का आगमन ग्रीक भाषा से हुआ है, जिसका अर्थ व्यर होता है, जिस प्रकार किसी जटिल अणु के अणु के समान होते हैं उसी प्रकार जैविक और अजैविक कारकों के अंतःक्रमण और अंतःक्रमण से पारिस्थितिकी संतुलन का विकास होता है, यह जीवमंडल का अंतःक्रमण का अंग है। इसके अंतर्गत होते हैं जीवमंडल के संतुलन पर संतुलन उत्पन्न हो जाता है।

पारिस्थितिकी कंट्रोल बसंत मानव या मानव समुदाय के लिए सर्वाधिक गंभीर चुनौती है, यह चुनौती कई कारणों का परिणाम है, जिनमें निम्नलिखित कारण प्रमुख हैं -

1) जनसंख्या वृद्धि की गति अत्यधिक तीव्र

- 1650 - 50 करोड़
- 1950 - 258 करोड़
- 1982 - 450 करोड़
- 1999 - 600 "

यह पारिस्थितिकी कंट्रोल का सबसे बड़ा कारण है।

2) मनुष्य के विविध गुण - मानव ही एकमात्र ऐसा प्राणी है, जो प्राकृतिक संसाधनों का विनाश तथा अप्रति के अलावा भी कई माध्यमों से करता है। मनुष्य अपने विनाश स्वयं को संतुलित नहीं रखता है जो कि

को ईत मसौदा न कहा " Man is a dirty Animal "

2) कोषांगिकता एवं नगरीकरण का बीच रिश्ता

3) रिश्ता प्रक्रिया की बीच गति - जनन, जी-बहन, परप्रेत को रिश्ता आदि के जाद्वि-मित्री अहंशुलन कहा है

4) जीव तकनीकी तथा अन्य प्रकार के तकनीकी के आनुवंशिक संकर डायल हुआ है।

जाद्विमित्री अहंशुलन के अनेक साधन है

सकते है लेखित अहंशुलन की अविश्वस्य तुल्यतः चार प्रकार के होना है -

- 1) विश्व स्तर पर प्रदूषण
- 2) विश्व वापन की समस्या
- 3) जैविक विविधता में कमी
- 4) वनों का ह्रास

प्रदूषण की समस्या -

कोषांगिकता का गति के बाद कदमः पर्यावरणीय प्रदूषण में बढ़ि होनी है, लेखित द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद इसके अप्रत्याशित बढ़ि हुई है। प्रदूषण का नालय है वातावरण में अवांछित भौतिक रसायनिक और जैविक पदार्थ का आगमन, इत आगमन से जलवायु एवं हवा के सामान्यतया प्रतिकूल होना से प्रभावित होना है, वर्तमान समय में प्रदूषण का दो वर्गों में बांटा गया है

- 1) भौतिक प्रदूषण
  - वायु
  - जल
  - ध्वनि
  - भूमि प्रदूषण
- 2) सामाजिक प्रदूषण

वायु प्रदूषण वा ठूल मात्रा वायुमंडल में  $CO_2$ ,  $CH_4$  तथा औद्योगिक कचरे वा लघु कणों में वृद्धि,  $CO_2$  के अधिक मात्रा से तापीय वृद्धि होती है, पुनः बढ़ते  $CFC$  तथा  $HFC$  के प्रयोग से ओजोन छिद्र की गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई, ओजोन छिद्र से निम्न वायुमंडल में पतलवर्गीय किरण का प्रवेश होता है, जो निम्न वायुमंडल में ऑक्सीजन तथा प्रदूषित करता है,  $CO_2$  तथा अन्य प्रदूषित गैरों वा सर्वाधिक प्रभाव तापीय और औद्योगिक प्रदूषण में देखने से मिलता है।

b) जलीय प्रदूषण -

जलीय प्रदूषण विकसित देशों की समस्या थी लेकिन वर्तमान समय में अतिरिक्त विकसित देश इस पर नियंत्रण स्थापित किया है, और विकसित देशों में यह समस्या अतिरिक्त बढ़ रहा है, अतिरिक्त महासागर और की. नगर नदी अथवा भील के किनारे बने हैं, अतिरिक्त कचरे इन जल स्रोतों में फेंके जाते हैं, जो प्रदूषण वा मुख्य कारण है, पुनः अम्ल वर्षा से उच्च जलीय वातावरण प्रदूषित होता है।

हिन्द महासागर के ऊपर 9.9 मिलियन टन  $km^2$  के ऊपर पर स्थित बाले बाले का निर्माण हुआ है, इसमें  $CO$ ,  $SO_2$  जैसे हानिकारक गैस हैं, ऐसी संभावना व्यक्त की जा रही है कि ये बाले भागीय उपमहादीप के ऊपर आ जायेंगे और जहाँ कतरेर समस्या उत्पन्न हो सकता है, इसका प्रमुख कारण भाग्य में जेदल की लहर में भागे वृद्धि और चंद्राक्षिण्य उद्योग वा विकास है।

जलीय प्रदूषण की समस्या कतरेर नदियों सागरीय और महासागरीय क्षेत्र में उत्पन्न हुआ है, इससे

तीन प्रमुख कारणां हैं -

- 1) मच्छली इच्छि और अपरिष्कृत मच्छली पत्रांत सं
- 2) तटीय नगरों का औद्योगिकीकरण
- 3) समुद्री जाइप लाइन सं तेल रिकॉव और समुद्री अनुसंधान कार्य सं महासागरीय जल प्रदूषित होते हैं।